संस्थापित १८६७ ई०

# आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२३ ● अंक - ४३ ● २३ अक्टूबर २०१८ आश्विन शुक्ल पक्ष चतुर्दशी संवत् २०७५ ● दयानन्दाब्द १६४ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

## जिला आर्य प्रतिनिधि सभा बागपत के तत्वावधान में आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

- डा0 धीरज सिंह, सभा प्रधान

- आर्य समाज की सम्पत्तियों पर अतिक्रमण बर्दाश्त नहीं।

- दिनांक–25 अक्टूबर, 2018 से 28 अक्टूबर, 2018 अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नई दिल्ली महाकुम्भ में भारी संख्या में भाग अवश्यक रूप से भागीदारी सुनिश्चित करें–

बागपत दिनांक–13 अक्टूबर,2018/ जिला आर्य प्रतिनिधि सभा बागपत के तत्वावधान में जिला आर्य महासम्मेलन बागपत में संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ के प्रधान–डॉ0 धीरज सिंह ने सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा कि प्रदेश में कार्यरत् आर्य समाजों की सम्पत्तियों पर किसी भी प्रकार का अतिक्रमण कतई बर्दाश्त नहीं किया जाएगा आर्यजनों को यह भरोसा दिलाते हुए, डॉ0 धीरज सिंह ने कहा कि अब अभियान चलाकर पूरे उत्तर प्रदेश में स्थित आर्य समाजों की सम्पत्तियों को अतिक्रमण मुक्त कराया जाएगा। बागपत जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के वार्षिकोत्सव के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में आर्यजनों को सम्बोधित करते हुए सभा प्रधान ने कहा कि सभा द्वारा बनाये गये प्रशासक–डॉ0 रवि शास्त्री ने जिस प्रकार बागपत जनपद में ढिकाना, ढिकौली में समाज की सम्पत्तियों को कब्जा मुक्त कराया और अग्रवाल मण्डी टटीरी में जसपाल राणा, करतार आर्य, अशोक आर्य, मनोज आर्य ने कब्जा मुक्त कराया ऐसा अभियान अब पूरे प्रदेश में चलाया जाएगा।

डॉ0 धीरज सिंह ने कहा कि आर्यजनों का परम् धर्म है कि सारे समाज को श्रेष्ठ करना, आर्य समाज किसी का अहित कतई नहीं करेगा, परन्तु इसका तात्पर्य यह कतई नहीं होना चाहिए कि कोई भी हमारे समाज में कब्जा या अतिक्रमण करे, समस्त आर्य समाजें आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ का अभिन्न अंग हैं और उनकी रक्षा करना हम जानते हैं, हमारे महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती और आर्य मनीषियों के त्याग और तपस्या का प्रतिफल है, कि आर्य समाज का इतना विस्तृत स्वरूप हमें प्राप्त हुआ है, जिसमें किसी का हस्तक्षेप आर्यजन कतई बर्दाश्त नहीं करेंगे।

**डॉ0 धीरज सिंह ने इस अवसर पर प्रदेश के आर्यों से आह्वान किया कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के तत्वावधान में दिनांक– 25 अक्टूबर से 28 अक्टूबर,2018 चार दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन (आर्यों का महाकुम्भ) स्वर्ण जयंती पार्क, रोहिणी, सैक्टर–10, दिल्ली में होने जा रहा है, जिसमें भारी से भारी संख्या में भागीदारी सुनिश्चित करें।**

## आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान एवं मंत्री ने शोक प्रकट किया

पूर्व मुख्यमंत्री नारायण दत्त तिवारी के निधन पर आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ के प्रधान डॉ० धीरज सिंह एवं सभा मंत्री श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी ने गहरा दुःख व्यक्त किया है। श्री तिवारी के निधन से इस देश के राजनीतिक क्षेत्र की बहुत बड़ी क्षति हुई है, जिसकी भरपाई किया जाना सम्भव नहीं है।

श्री तिवारी जी हमेशा राजनीतिक क्षेत्र अपना प्रमुख स्थान रखते थे। श्री तिवारी जी उत्तर प्रदेश के ३ बार मुख्यमंत्री रहे तथा उत्तराखण्ड के भी मुख्यमंत्री रहे तथा आन्ध्र प्रदेश के राज्यपाल रहे तथा अनेकों संगठनों में विभिन्न पदों पर एक कार्यकर्ता की भांति कार्य करते रहे। श्री तिवारी जी के निधन से वास्तविक क्षति हुई है, परन्तु परम्पिता परमेश्वर का इस व्यवस्था में किसी का वश नहीं हैं। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की गई है कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं शोक संतृप्त परिवार को इस असह्य दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की कामना की है।

## अन्तरंगाधिवेशन सूचना

सभी पदाधिकारियों, प्रतिष्ठित, सहयुक्त, अन्तरंग सदस्यों को सूचित किया जा है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० की अन्तरंग सभा की बैठक दिनांक ०४–११–२०१८ दिन–रविवार (कार्तिक कृष्ण द्वादशी) को पूर्वाहन् ११.०० बजे से संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा, नरायण स्वामी भवन, ५–मीराबाई मार्ग, लखनऊ में प्रधान/का० प्रधान– डॉ० धीरज सिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न होगी। एजेण्डा एवं विस्तृत विषयों की रूप–रेखा सभी को डाक द्वारा भेज दी गई है। कृपया समय से उपस्थित होकर अधिवेशन को सफल बनायें।

–स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
सभा मंत्री

**डॉ. धीरज सिंह**
प्रधान/संरक्षक

**स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती**
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

# विजयादशमी पर दर्दनाक हादसा

विजयादशमी के पावन पर्व पर प्रतिवर्ष देश में कोई न कोई दुर्घटनायें होती ही रहती हैं सरकार के सभी प्रयास छोटे पड़ते जा रहे हैं। इस वर्ष पंजाब में जो घटना हुई है उससे प्रत्येक भारतवासी दुःखी है आर्य समाज की संवेदनायें भी उन परिवारों के साथ हैं जो अपने–बेटे, भाई, पिता, बहिनों और माताओं को आज इस दुर्घटना में उस स्थिति में देख रहे हैं जहां कोई देखना तो दूर की बात है सोचना–विचारना भी उचित नहीं समझता। इसका मूल कारण क्या है? पूरे देश में शिक्षा का स्तर बढ़ रहा है स्कूल कालेज, वि.वि. बढ़ रहे हैं पर कोई पढ़ नहीं रहा है क्योंकि कोई नेता हो या अभिनेता आचार्य हो अथवा छात्र–साधु हो या सन्त सभी के मन में यह धारण परिपक्व हो रही है कि रावण का वध भगवान राम ने इस अवसर पर ही किया था। प्रामाणिक पुस्तक बाल्मीकि रामायण है लोग रामचरित मानस को भी रामायण मानने लगे हैं क्योंकि कहते हैं कि कल से अखण्ड रामायण का पाठ प्रारम्भ करेगें जबकि पाठ रामचितमानस का ही होता है। इन दोनों ग्रन्थों में कहीं भी ऐसा प्रमाण नहीं मिलता कि विजयादशमी पर्व पर लंकाधिपति रावण को युद्ध में श्रीरामचन्द्र जी ने पराजित कर उसका वध किया था फिर भी चल रहा है और सब यही प्रचार कर रहे हैं कोई नहीं पढ़ता जो पढ़ते है उसकी कोई नहीं सुनता और क्रियान्वित करने के विषय में भी कोई नहीं विचार करता।

राम–रावण के युद्ध से पूर्व क्या विजयादशमी पर्व नहीं था? होली दीपावली, श्रावणी तथा विजयादशमी पर्व पूर्व में भी मनाये जाते थे गोले अथवा अग्नि से जलाना, पटाखे पटकाकर प्रदूषण फैलाने की परम्परा नहीं थी आज सब कुछ विपरीत हो रहा है। यदि गोले छोड़कर प्रदूषण एवं ध्वनि प्रदूषण न किया जाता तो यह रेल दुर्घटना नहीं हो पाती आजकल सेल्फी लेने की परम्परा भी भयावह हो रही है। वाट्सऐप द्वारा जो–जो युवा पीढ़ी सीख रही है पढ़ रही है वह भी भावी पीढ़ी के लिए और भविष्य के लिए अच्छा सन्देश नहीं है प्रत्येक माता इस विषय में थोड़ी गम्भीरता से चिन्तन ..... संकल्प लेवें। विजय पर्व हमारी दैवी सम्पदा की रक्षा के लिए हैं आसुरी वृत्तियों को नष्ट करने का समय़ है। असत्य पर सत्य की विजय का पर्व है यह कहकर भूल जाते हैं कि सत्य क्या है और असत्य क्या है? इस विषय पर चिन्ता करना हमारा मुख्य कर्तव्य होना चाहिए। देवासुर संग्राम पुस्तकों में पढ़ा है और अपने बड़ों से सुना है लेकिन वह किस स्थान पर हुआ? शेषनाग को कौन पकड़कर लाया *विन्ध्याचल पर्वत को किसने उखाड़ा? फिर मंथनी बनाकर मथ डाला* दोनों दिशाओं में देवता और असुर लग गए शेषनाग की लम्बाई कितनी थी? फिर उसे (फन) मुख की ओर से किसने पकड़ा था? ये सारे प्रश्न अभी तक अनुत्तरित हैं उन्हें प्रश्न करने की सोचने, विचारने की आवश्यकता नहीं रहती। अध्यात्म विद्या के साधक कहते हैं कि हृदय रूपी समुद्र में संकल्प–विकल्प रूपी देव और आसुरी विचारों का संग्राम (लड़ाई) चलता रहता है अन्त में दैवी विचारों को विजय प्राप्त होती है उसके लिए साधना–तपस्या नियम, संयम सभी हमारी दैवी सम्पदा है उसकी सुरक्षा करना हमारा नैतिक दायित्व है इस संकल्प के साथ हमें यह पर्व मनाना चाहिए। यह बात आर्य समाज ही बता सकता है। फिर कोई इस प्रकार की दुर्घटनायें नहीं होगी सर्वसमाज सुखी रहेगा प्रत्येक प्राणी प्रसन्न रहेगा उत्साह के वातावरण में पुनातीति पर्व प्रणातीत वा पवित्रामा और प्रसन्नता दोनों ही सार्थक होगें ये पर्व हमारे लिए सदैव शुभ हो कभी कोई ऐसी दुर्घटना की पुनरावृत्ति न होने पावें। आर्य मित्र परिवार एवं आर्य प्रतिनिधि सभा परिवार की ओर से सभी दिवंगत आत्माओं के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हुए आत्मीय जनों के प्रति धैर्य की प्रार्थना करते हैं।

–धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

# वेदामृतम्

अदिते मित्र वरुणोत मळ", यद्वो वयं चकृमा कच्चिदागः"।
उर्वश्यामभयं ज्योतिरिन्द्र", मानोदीर्धा अभिनशन् तमिस्त्राः।।

ऋग् २.२७.१४

*मैं आज देवों को पुकार रहा हूँ। हे अदिति! हे मित्र! हे वरुण! हे इन्द्र! तुम हमें दुःख-पारावारसे निकालकर सुखी करो। कभी खण्डित होनेवाली, अजर-अमर बनी रहने वाली जगन्माता अदिति है। 'मित्र' मन है, 'वरुण' प्राण है, 'इन्द्र' जीवात्मा है।* इसके प्रति हम अपने जीवन में अनेक अपराध करते हैं। जगन्माता अदिति ने जो वेदोपदेश दिये हैं, और मनुष्य के लिए जो नैतिक नियम निर्धारित किये हैं, उन्हें हम भंग करते हैं। मन-रूप मित्र जो शुभ संकल्प करता है, उसकी हम उपेक्षा करते हैं। प्राण-रूप वरुण जिस पद्धति से शरी को चलाना चाहता है, उसके प्रतिकूल चलकर हम उसमें बाधा उपस्थित करते हैं। आत्मा-रूप इन्द्र की अर्न्तवाणी को अनसुना कर हम उसके प्रति भी अपराध करते हैं। सामाजिक दृष्टि से अदिति राष्ट्रभूमि है, यतः वह अच्छेद्य, अभेद्य एवं अखण्डनीय होती है। 'मित्र' सर्वभूत-मैत्री का प्रसारक विद्वान् ब्राह्मण है। 'वरुण' शत्रुओं को पाशों में बांधने वाला सेनापति है। 'इन्द्र' राजा है।

हम यदि राष्ट्रभूमि के साथ विद्रोह या विश्वासघात करते हैं, राष्ट्र के विद्वान ब्राह्मण का अपमान करते हैं या उनके मैत्री के सन्देश को खण्डित करते हैं, लुके-छिपे शत्रु-पक्ष की सहायता कर सेनापति के कार्य में विघ्न उपस्थित करते हैं, राजनियमों को भंग कर राज-विद्रोह करते हैं, तो हमारा यह सब कार्य-कलाप राष्ट्रीय या सामाजिक देवों के प्रति अपराध है। उपर्युक्त समस्त, आध्यत्मिक और राष्ट्रीय देव हमारे अपराधों के व्यसन से हमें मुक्त कराकर हमें सुखरी करें। हे इन्द्र! हे आत्मन्! हे राजन्! हमपर ऐसा अनुग्रह करो कि हस विस्तीर्ण निर्भय ज्योति को प्राप्त करें। हमारे जीवन में जो निराशा, असफलता, उत्साहहीनता, चिर-उदासीनता आदि की तमःपूर्ण निशाएं कभी-कभी आ जाती है, उनमें हम उद्धार पा जाएं, और हम अपने जीवन को आशा, सफलता, उत्साह, स्फूर्ति एवं कर्मण्यता से ओत-प्रोत बनाकर संसार-समर में सद विजयी होते रहें।

**साभार** वेदमञ्जरी

गतांक से आगे .....

# सत्यार्थ प्रकाश

## अथ सप्तमसमुल्लासारम्भः

प्रश्न- अनेन आत्मना जीवेनानुप्रविश्य नामरूपे व्याकरवाणि।-छां०।।
तत् सृष्ट्वा तदेवानुप्राविशत्।। -तैत्तिरीय०।।

परमेश्वर कहता है कि मैं जगत् और शरीर को रचकर जगत् में व्यापक और जीवरूप होके शरीर में प्रविष्ट होता हुआ नाम और रूप की व्याख्या करूं।।१।। परमेश्वर ने उस जगत् और शरीर को बना कर उसमें वही प्रविष्ट हुआ। इत्यादि श्रुतियों का अर्थ दूसरा कैसे कर सकोगे?।।२।।

उत्तर – जो तुम पद, पदार्थ और वाक्यार्थ जानते तो ऐसा अनर्थ कभी न करते! क्योंकि यहां ऐसा समझो एक प्रवेश और दूसरा अनुप्रवेश अर्थात् पश्चात् प्रवेश कहाता है। परमेश्वर शरीर में प्रविष्ट हुए जीवों के साथ अनुप्रविष्ट के समान होकर वेद द्वारा सब नाम रूप आदि की विद्या को प्रकट करता है। और शरीर में जीव को प्रवेश करा आप जीव के भीतर अनुप्रविष्ट हो रहा है। जो तुम अनु शब्द का अर्थ जानते हो तो वैसा विपरीत अर्थ कभी न करते।

(प्रश्न) 'सोऽयं देवदत्तो य उष्णकाले काश्यां दृष्टः स इदानीं प्रावृट्समये मथुरायां दृश्यते।' अर्थात् जो देवदत्त मैंने उष्णकाल में काशी में देखा था उसी को वर्षा समय में मथुरा में दूखता हूँ। यहां वह काशी देश उष्णकाल यह मथुरा देश मथुरा देश और वर्षाकाल को छोड़कर शरीरमात्र में लक्ष्य करके देवदत्त लक्षित होता है। वैसे इस भागत्यागलक्षणा से ईश्वर का परोक्ष देश, काल, माया, उपाधि कुछ ग्रहण करना और कुछ छोड़ देना जैसा सर्वज्ञत्वादि वाच्यार्थ ईश्वर का और अल्पज्ञत्वादि वाच्यार्थ जीव का छोड़ कर चेतनमात्र लक्ष्यार्थ का ग्रहण करने से अद्वैत होता है। यहां क्या कह सकोगे?

उत्तर- प्रथम तुम जीव और ईश्वर को नित्य मानते हो वा अनित्य?

प्रश्न- इन दोनों को उपाधिजन्य कल्पित होने से अनित्य मानते हैं।

प्रश्न- हमारे मत में-

जीवेशौ च विशुद्धाचिद्विभेदस्तु तयोर्द्वयोः।
अविद्या तच्चितोर्योगः षडस्माकमनादयः।।१।।
कार्य्योपाधिरयं जीवः कारणोपाधिरीश्वरः
कार्य्योपाधिरयं जीवः कारणोपाधिरीश्वरः।।२।।

ये 'संक्षेपशारीरिक' और 'शारीरिकभाष्य' में कारिका हैं।

हम वेदान्ती छः पदार्थों अर्थात् एक जीव, दूसरा ईश्वर, तीसरा ब्रह्म, चौथा जीव और ईश्वर का विशेष भेद, पांचवा अविद्या अज्ञान और छठा अविद्या और चेतन का योग इनको अनादि मानते हैं।।१।। परन्तु एक ब्रह्म अनादि, अनन्त और अन्य पांच अनादि सान्त हैं जैसा कि प्रागभाव होता है। जब तक अज्ञान रहता है तब तक ये पांच रहते हैं और इन पांच की आदि विदित नहीं होती। इसलिए अनादि और ज्ञान होने के पश्चात् नष्ट हो जाते हैं इसलिए सान्त अर्थात् नाशवाले कहाते हैं।।२।।

उत्तर- ये तुम्हारे दोनों श्लोक अशुद्ध हैं क्योंकि अविद्या के योग के बिना जीव और माया के योग के बिना ईश्वर तुम्हारे मत में सिद्ध नहीं हो सकता। इससे 'तच्चितोर्योगः' जो छठा पदार्थ तुमने गिना है वह नहीं रहा। क्योंकि वह अविद्या माया जीव ईश्वर में चरितार्थ हो गया और ब्रह्म तथा माया और अविद्या के योग के बिना ईश्वर नहीं बनता फिर ईश्वर को अविद्या और ब्रह्म से पृथक गिनना व्यर्थ है। इसलिये दो ही पदार्थ अर्थात् ब्रह्म और अविद्या तुम्हारे मत में सिद्ध हो सकते हैं, छः नहीं।

तथा आपका प्रथम कार्योपाधि और कारणोपाधि से जीव और ईश्वर का सिद्ध करना तब हो सकता कि जब अनन्त, नित्य, शुद्ध, बुद्ध, मुक्तस्वभाव, सर्वव्यापक ब्रह्म में अज्ञान सिद्ध करें। जो उसके एक देश में स्वाश्रय और स्वविषयक अज्ञान अनादि सर्वत्र मानोगे तो सब ब्रह्म शुद्ध नहीं हो सकता। और जब एक देश में अज्ञान मानोगे तो वह परिच्छिन्न होने से इधर-उधर आता जाता रहेगा। जहां-जहां जायगा वहां-वहां का ब्रह्म अज्ञानी और जिस-जिस देश को छोड़ता जायगा उस-उस देश का ब्रह्म ज्ञानी होता रहेगा तो किसी देश के ब्रह्म को अनादि शुद्ध ज्ञानयुक्त न कह सकोगे और जो अज्ञान की सीमा में ब्रह्म है वह अज्ञान को जानेगा। बाहर और भीतर के ब्रह्म के टुकड़े हो जायेंगे।

– क्रमशः

# सिक्के के दो पहलू

**– विवेक आर्य**

रतलाम जिले के एक हेलमेट पहने दूल्हे की तस्वीर कई दिन इंटरनेट पर प्रसारित हुयी है। दुल्हा दलित समुदाय से सम्बंधित है एवं उसने हेलमेट इसलिए पहना है क्योंकि उस गांव के सवर्ण लोगों द्वारा दलित समाज से संबंधित व्यक्ति द्वारा घोड़ी की सवारी करने पर आपत्ति है। दलित भाई इसे सवर्णों द्वारा दलितों पर अत्याचार के रूप में प्रचारित कर रहे हैं। इस घटना को विभिन्न दलित संस्थाओं द्वारा प्रकाशित पत्र–पत्रिकाओं से लेकर इंटरनेट पर व्यापक रूप से यह दिखाने के लिए प्रचारित किया जा रहा है कि सम्पूर्ण सवर्ण हिन्दू समाज अत्याचारी है। निश्चित रूप से यह अत्याचार है और हम इसकी निंदा करते है मगर इस घटना का सहारा लेकर जो सवर्ण और दलितों के मध्य वैमनस्य पैदा किया जा रहा है वह एक देश घातक सोची समझी साजिश हैं। ध्यान से देखने पर मालूम चलता है कि दलित मुखपत्रों के चलाने वाले अथवा दिशा निर्देश देने वाले मुख्य रूप से ईसाई अथवा मुस्लिम होते हैं जो समाज सेवा की आड़ में विदेशी धन के बल पर हिन्दू समाज को तोड़ने का कार्य करते हैं। आज के समय में ६० प्रतिशत से अधिक हिन्दू समाज जातिवाद को नहीं मानता। केवल १० प्रतिशत अज्ञानता के चलते जातिवाद को मानते हैं जिसका उन्मूलन आवश्यक है। मगर उन १० प्रतिशत के कुकृत्य को बाकी ६० प्रतिशत कर थोपना सरासर गलत है। इस घटना के विरोध से दूरियां घटने के सीपन पर बढ़ेगी इसमें कोई दो राय नहीं है। तो इसका समाधान क्या है? इसका समाधान है ऐसी घटनाओं को जोर शोर से *प्रचारित करना जिसमें सवर्ण और दलित के मध्य* दूरियां कम करने का प्रयास किया गया था और उसमें आंशिक ही सही मगर सफलता अवश्य मिली। आप बुराई के स्थान पर अच्छाई वाले दृष्टान्तों को प्रचारित कर भी सामाजिक सन्देश दे सकते हैं जिससे सकारात्मक माहौल बने और वैमनस्य न बढ़े। इस लेख के माध्यम से हम कुछ घटनाओं को यहां लिखते हैं– सोमनाथ जी की माता का अमर बलिदान।

आर्य समाज के इतिहास में अनेक प्रेरणादायक संस्मरण हैं जो अमर गाथा के रूप में सदा–सादा के लिए प्रेरणा देते रहेंगे। एक ऐसी ही गाथा रोपड़ आर्यसमाज के प्रधान थे। आपके मार्गदर्शन में रोपड़ आर्यसामज ने रहतियों की शुद्धि की थी। यूँ तो रहतियों का सम्बन्ध सिख समाज से था मगर उनके साथ अछूतों सा व्यवहार किया जाता था। आपके शुद्धि करने पर रोपड़ के पौराणिक समाज में आर्यसमाज के सभी *परिवारों का बहिष्कार कर दिया एवं रोपड़ के* सभी कुओं से आर्य समाजियों को पानी भने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। आखिर में नहर के गंदे पानी को पीने से अनेक आर्यों के पेट के रोग हो गए जिनमें से एक सोमनाथ जी की माता जी भी थी। उन्हें आन्त्रज्वर हो गया था। वैद्य जी के अनुसार ऐसा गन्दा पानी पीने से हुआ था। सोमनाथ जी के समक्ष अब एक रास्ता तो क्षमा मांगकर समझौता करने का था और दूसरा रास्ता सब कुछ सहते हुए परिवार की बलि देने का था। आपको चिंताग्रस्त देखकर आपकी माताजी ने आपको समझाया कि एक न एक दिन तो उनकी मृत्यु निश्चित हैं फिर उनके लिए अपने धर्म का परित्याग करना गलत होगा। इसलिए धर्म का पालन करने में ही भलाई हैं। सोमनाथ जी माता का आदेश पाकर चिंता से मुक्त हो गए एवं और अधिक उत्साह से कार्य करने लगे। उधर माता जी रोग से स्वर्ग सिधार गई तब भी विरोधियों के दिल नहीं पिघले। विरोध दिनों दिन बढ़ता ही गया। इस विरोध के पीछे गोपीनाथ पंडित का हाथ था। वह पीछे से पौराणिक हिन्दुओं को भड़का रहा था। सनातन धर्म गजट में गोपीनाथ ने अक्टूबर १९०० के अंक में आर्यों के खिलफ ऐसा भड़काया कि आर्यों के बच्चे तक प्यास से तड़पने लगे थे। सख्त से सख्त तकलीफें आर्यों को दी गई। लाला सोमनाथ को अपना परिवार रोपड़ से लेकर जालंधर जाना पड़ा था। जब शांति की कोई आशा न दिखी तो महाशय इंदरमन आर्य सिंह (जिन्हें शुद्ध किया गया था) और लाला सोमनाथ स्वामी श्रद्धानन्द ( तब मुंशीराम जी) से मिले और सनातन गजट के विरूद्ध फौजदारी मुकदमा करने के विषय में उनसे राय मांगी। मुंशीराम जी उस काल तक अदालत में धार्मिक मामलों को लेकर जाने के विरूद्ध थे। कोई और उपाया न देख अंत में मुकदमा दायर हुआ जिस पर सनातन धर्म गजट ने १५ मार्च १९०१ के अंक में आर्यसमाज के विरूद्ध लिखा "हम रोपड़ी आर्यसमाज का इस छेड़खानी के आगाज के लिए धन्यवाद अदा करते हैं की उन्होंने हमें विधिवत अदालत के द्वारा ऐलानिया जालांधर में हमें निमंत्रण दिया हैं। जिसको मंजूर करना हमारा कर्तव्य है।"

३ सितम्बर १९०१ को मुकदमा सोमनाथ बनाम सीताराम रोपड़ निवासी का फैसला भी आ गया। सीताराम अपराधी ने बड़े जज से माफी मांगी। उसने अदालत में माफीनाम पेश किया। मुझ सीताराम ने लाला सोमनाथ प्रधान आर्यसमाज रोपड़ के खिलाफ चिट्ठी सनातन धर्म गजट में छपवाई थी, मुझे ऐसा अफसोस से लिखना है कि इसमें आर्यों की तोहीन के खिलाफ बातें दर्ज हो गई थी। जिससे उनको सख्त नुकसान पहुंचा। इस कारण मैं बड़े अदब (शिष्टाचार) से माफी मांगता हूं। मैं लाला साहब के सुशील हालत के लिहाज से ऐसी ही इज्जत करता हूं जैसा कि इस चिट्टी के छपवाने से पूर्व करता था। मैं उन्हें बिरादरी से खारिज नहीं एमझता, उनके अधिकार साधारण व्यक्तियों सहित वैसे ही समझता हूँ जोकि पहिले थे। मुझे आर्य लोगों से कोई झगड़ा नहीं हैं। साधारण लोगों को सूचना के वास्ते यह माफीनामा अखबार सत्यधर्म प्रचारक और अखबार पंजाब समाचार लाहौर में और जैन धर्म सदाकत लाहौर में प्रकाशित कराता हूं।

इस प्रकार से अनेक संकट सहते हुए आर्यों ने दलितोद्धार एवं शुद्धि के कार्य को किया था। मौखिक उपदेश देने में और जमीनी स्तर पर पुरूषार्थ करने में कितना अंतर होता है इसका यह यथार्थ उदाहरण है। सोमनाथ जी की माता जी का नाम इतिहास के स्वर्णिम अक्षरों में अंकित हैं। सबसे प्रेरणादायक तथ्य यह है कि किसी सवर्ण ने अछूतों के लिए अपने प्राण न्यौछावर केवल आर्यसामज के इतिहास में ही मिलते हैं।

नारायण स्वामी जी और दलितोद्धार

आर्यसमाज के महान नेता महात्मा नारायण स्वामी जी का जीवन आज हमारे लिए कदम–कदम पर आर्य बनने की प्रेरणा दे रहा है। स्वामी जी की कथनी और करनी में कोई भेद नहीं था। उनके जीवन में अनेक प्रसंगों में से दलिताद्धार से संबंधित दो प्रसंगों का पाठकों के लाभार्थ वर्णन करना चाहता हूं। नारायण स्वामी जी तब मुरादाबाद आर्यसमाज के प्रमुख कार्णधार थे। आर्यसमाज में ईसाई एवं मुसलमान भाइयों की अनेक शुद्धियां उनके प्रयासों से हुई थी जिसके कारण मुरादाबाद का आर्यसमाज प्रसिद्ध हो गया। मंसूरी से डॉ० हुकुम सिंह एक ईसाई व्यक्ति की शुद्धि के लिए उसे मुरादाबाद लाये। उनका पूर्व नाम श्री राम था व वह पहले सारस्वत ब्राह्मण थे। ईसाईयों द्वारा बहला–फसला कर किसी प्रकार से ईसाई बना लिए गए थे। आपकी शुद्धि करना हिन्दू समाज से पंगा लेने के समान था। मामला नारायण स्वामी जी के समक्ष प्रस्तु हुआ। अपने अंतरंग में निर्णय लिया की नाम मात्र की शुद्धि का कोई लाभ नहीं है। शुद्धि करके उसके हाथ से पानी पीने का नम्र प्रस्ताव रखा गया जो स्वीकृत हो गया। यह खबर पूरे मुरादाबाद में आग के समान फैल गई। शुद्धि वाले दिन अनेक लोग देखने के लिए जमा हो गए। शुद्धि कार्यक्रम सम्पन्न हुआ एवं शुद्ध हुए व्यक्ति के हाथों से आर्यों द्वज्ञरा जल ग्रहण किया गया। अब घोर विरोध के दिन आरम्भ हो गए। निकालो इन आर्यों को जात से, कोई कहार इनको पानी न दे, कोई मेहतर इनके घर की सफाई न करे, कोई इन्हें कुंए से पानी न भरने दे ऐसे अपशब्दों से आर्यों का सम्मान किया जाने लगा। बात कलेक्टर महोदय तक पहुंच गई। उन्होंने मुंशी जी को बुलाकर उनसे परामर्श किया। मुंशी जी ने सब सत्य–बनयान कर दिया तो कलेक्टर महोदय ने कहा कि आर्य लोग इसकी शिकायत क्यों नहीं करते। मुंशी जी ने उत्तर दिया। हम लोग स्वामी दयानन्द के अनुयायी हैं। एक बार ऋषि ने कहा इसे छोड़ दीजिए। मैं लोगों को कैद कराने नहीं अपितु कैद से मुक्त कराने आया हूं। ये लोग मूर्खतावश आर्यों का विरोध करते हैं। इन्हें ज्ञान हो जायेगा तो स्वयं छोड़ देंगे। अंत में कोलाहल शांत हो गया और आर्य अपने मिशन में सफल रहे।

कुंआ नापाक हो गया–

एक अन्य प्रेरणादायक घटना नारायण स्वामी जी के वृन्दावन गुरूकुल भूमि में गुरूकुल के स्वत्व में एक कुआं था। उस काल में एक ऐसी प्रथा थी कुओं से मुलमान भिश्ती तो पानी भर सकते थे मगर चमारों को पानी भने की मनाही थी। मुसलमान भिश्ती चाहें तो पानी चमारों को दे सकते थे। कुल मिलाकर चमारों को पानी मुसलमान भिश्तियों की कृपा से मिलता था। जब नारायण स्वामी जी ने यह अत्याचार देखा तो उन्होंने चमारों को स्वयं से पानी भरने के लिए प्रेरित किया। चमारों ने स्वयं से पानी भरना आरम्भ किया तो उससे कोलाहल मच गया। मुसलमान आकर स्वामी जी से बोले कि कुआं नापाक हो गया है क्योंकि जिस प्रकार बहुत से हिन्दू हम को कुंए से पानी नहीं भरने देते उसी प्रकार हम भी इन अछूतों को कुंए पर चढ़ने नहीं देंगे। स्वामी जी ने शांति से उत्तर दिया "कुआं हमारा है। हम किसी से घृणा नहीं करते। हमारे लिए तुम सब एक हो। हम किसी मुसलमान को अपने कुंए से पानी भरने को नहीं रोकते। तुम हमारे सभी कुओं से पानी भर सकते हो। जैसे हम तुमसे घृणा नहीं करते, हम चाहते हैं कि तुम भी चमारों से घृणा न करो। इस प्रकार से एक अनुचित प्रथा का अंत हो गया। आर्यसमाज के

शेष पृष्ठ ६ पर

संतरा और मंथरा-

# "रथी सुनो! सारथी की अन्तर्ध्वनि"

- देवनारायण भारद्वाज

महात्मा आनन्द स्वामी की एक बोध कथा है। लाहौर में एक प्रभु प्रेमी छज्जू भक्त रहते थे। अपने चौबारे में सत्संगियों के साथ बैठे थे। ज्ञान–ध्यान की बातें चल रही थीं कि नीचे संतरे बेचने वाला आया और ऊँची आवाज़ से कहने लगा– "अच्छे संगतरे! अच्छे संगतरे।" छज्जू भक्त ने सत्संगियों से पूछा– "भक्तो! यह नीचे से क्या आवाज आ रही है? सत्संगी–'महाराज', संतरे बेचने वाला संतरों का गुण बता रहा है। छज्जू–ठीक है, परन्तु कहता क्या है, सुनो तो सही ध्यान से! इतने में फिर आवाज आई– "अच्छे संगतरे!" सत्संगी–भक्त जी, अच्छे संगतरे जो अच्छे की संगति करता है, वह तर जाता है। अच्छे संगतरे।" अब बात सुनिये आप–मन्थरा की, जो रानी कैकेयी के साथ दासी बनकर आयोध्या के राजमहल में आ गयी थी। उसने यह भी देखा था कि ज्येष्ठ पुत्र राम को मां कौशल्या से अधिक कैकेयी चाहती थी, और वे भी उन्हीं के साथ महल में रहकर लाड़ प्यार पाते थे, जब उनके राज्य सिंहासन पर बैठने का अवसर आया तो माता कौशल्या से अधिक प्रफुल्लित कनिष्ठ मां कैकेयी थीं। परिस्थिति कोई भी क्यों न हो, उनके इस प्रमोद को क्षोभ में बदलने का काम दासी मन्थरा ने कर दिखाया, जिससे राज्यासन प्रत्याशी राम को बनवासी बनना पड़ गया।

कोउ नृप होय हमहि का हानी।
राम तुम्ह प्रिय सो फुरि मानी।।
रहा प्रथम अब ते दिन बीते।
समउ फिरे रिपु होहिं पिरीते।।
*रेख खैचाई कहऊँ बलु भाषी।*
भामिनि भइहु दूध कइ माखी।।
जो सुत सहित करहु सेव काई।
तौ घर रहहु न आन उपायी।

अधिक कथन की आवश्यकता नहीं। आगे की रामकथा विश्वव्याप्त है। यहां पर सन्तरा एवं मन्थरा के निहितार्थ व रूपाकृति की ओर इंगित करना ही पर्याप्त है। पुरूषार्थरत देवताओं का परिपोषक पूजन, अनेकशः खापों को अपने अन्दर रख–संगतीकरण और मधुर रस संरक्षण के दान से पृथ्वी की गोलाकृति व केसरिया छवि के अनुसार सन्तरा एक याग् (यज्ञ) है, जबकि ऊबड़–खाबड़, कलुषित मल जड़ित मूढ़मतिधारी मन्थरा केवल आग है, जो सुखभरी साख को केवल राख बनाना जानती है। इसीलिए वेदमाता हमें सावधान करते वेदमाता हमें सावधान करते हुए उपरोक्त कथन को इस प्रकार मुखर करती है

श्रुणी नो अग्ने सदने सधस्थे युक्ष्वा रथममृतस्य द्रवित्नुम्।
*आ नो वह रोदसी देवपुत्रे माकिर्देवानामप भूरिह स्याः।।* (अथर्व, १८.१.२५)

भावार्थतः– प्रभु जीव से कहते हैं, तू प्रगतिशील बन। मैं व तुम एक ही सदन में साथ–साथ रहते हैं। वह ह्रदय सदन है, जहां मैं तुझसे कुछ कहता हूँ। उसको सुन। तू अपने शरीर रूपी रथ को कर्तव्य पथ पर चलने के लिए जोत और यह तेरा रथ सदैव अमृत का द्रावक हो। उन्नति के आकांक्षी जीव से प्रभु आगे कहते हैं– अपने भूमि एवं द्युलोक के सदृश मैंने तुझे शरीर व मस्तिष्क दिए हैं। तू देव पुत्र हो–दिव्यगुणों को धारण कर सुरक्षित रहने वाला हो। अहंकारी होकर दिव्यगुण सम्पन्न विद्वान जनों का अपमान मत करना, प्रत्युत उनसे मिले रहकर सत्संग करने वाला बने रहना। शरीर रथ के जुते रहने से ही अमृत एरना संभव है। देखिये, "स्वादो नैव बिना स्वेदं विश्रामो न श्रमं बिना" (स्वाध्याय–संदीप पृष्ठ १४३) व्यंजनों व उपलब्धियों का स्वाद–सुख पसीना बहाने पर और विश्राम या आराम का आनन्द श्रम–साधना के बाद ही संभव है। यही सार्थक सफलतायें यश–ऐश्वर्य के अमृत के रूप में बरसती हैं। अस्तु हर प्रकार के प्रमाद से बचे रहना है। जो सर्वाधिक सगे सहोदर एवं समीपी होते हैं, हम उनकी ही नहीं सुनते, और 'दूर के ढोल सुहावने लगते हैं।' कोई गाता चला जा रहा था जो सुन पाया वह यह था– "यह मुलाकात एक बहाना है। प्यार का सिलसिला पुराना है। दिल को दिल से करीब लाना है।" इसके लिए वेदमाता फिर हमें सावधान करती हैं। यथा–

दुर्मन्त्वत्रामृतस्य नाम सलक्ष्मा यद्विषुरूपा भवाति।
यमस्य यो मनवते सुमन्त्वग्ने तमृष्व पाहाप्रयुच्छन्।। (अथर्व, १८.१.३४)

भावार्थतः– यहाँ इस संसार में अविनाशी प्रभु का नाम स्मरण करना कठिन है, क्योंकि यह आकर्षक प्रलोभन पूर्ण लक्षणों वाली प्रकृति विविध सुन्दर रूपों युक्त चमकदार होकर हमारे ध्यान को अपनी ओर आकृष्ट करके हमें प्रभु प्यारे से दूर ले जाती है। किन्तु जो कोई मनुष्य उस नियन्ता प्रभु के उत्तम मनन योग्य नाम का चिन्तन करता है, तो अग्रणी ज्ञानमय दर्शनीय व जानने योग्य प्रभु, उस नाम स्मरण करने वाले को प्रमाद रहित करते हुए उसका बिना चूके रक्षा करते हैं। नाम जप का तात्पर्य यह नहीं है– "उल्टा नाम जपा जग जाना वाल्मीकि भये ब्रह्म समाना।" नाम के साथ उसके अन्तर्निहित गुण का चिन्तन और अपने जीवन में उसका परिपालन ही फलदायी होता है। यह हास्य प्रसंग इसी की ओर संकेत करता है। आध्यात्मिक जगत के सनातन सम्बाददाता नारद जी स्वर्ग लोक का अवलोकन करने गये, तो वहां अधिकांश वे संविदायक व अभियन्ता मौज मस्ती करते हुए मिले जो सड़कों का लोहा–सीमेण्ट हजमकर जाते थे और सड़के टूटी–फूटी, गड्डों से भरपूर बनी रहती थी। साथ ही वहां वे बस चालक भी थे जो वाहन अनुरक्षण के धन को स्वयं खा जाते थे और बसें खटारा बनी रहती थी। बस यात्री अपनी पूरी यात्रा भगवान के नाम का स्मरण व उच्चारण करते हुए पूरी करते थे। नारद जी ने नरकलोक में जाकर देखा तो पाया कि अधिकतर वे कथा वाचक महाराज वहां तड़प रहे हैं जिन्होंने भक्तों को सदा प्रभु नाम से दूर रखा, जिस भगवान ग्रन्थ में इन राधाजी का कहीं नाम तक नहीं है, परन्तु उन्होंने प्रभु नाम के स्थान पर हाथ उठाकर ताली बजाते व नचाते हुए 'राधे–राधे' कहलाकर भक्तों को परमेश्वर प्रभु से दूर कर दिया। मन्त्र में नाम स्मरण द्वारा गुण चिन्तन एवं तदनुकूल क्षमता भर परिपालन से है। जैसा कि ऊपर मन्त्र में शरीर को रथ बताया है, तो उसके संचालन के लिए रथी व सारथी दोनों चाहिए। जीवात्मा रथी है, किन्तु इस रथ को चलाने वाला तो परमात्मा ही सारथी है। जब तक जीवात्मा शरीर में है तब तक वह इसका रथी हैं, उसके चले जाने पर इसे 'अरथी' कहकर श्मशासन में दाह–संस्कार के लिए ले जाना पड़ता है। रथी के रहने तक ही परमेश प्रभु इसे सारथी की भांति संचालित रखते हैं। व्यवहार में यही देखने को मिलता है कि हर रथी या महारथी रथयान, कारयान, रेलयान, वायुयान, जलयान या अनरू किसी वाहन से यात्रा करता है तो उसका चालक अवश्य होता है, जिसे यहां पर सारथी कहा गया है। सारथी का कार्य रथी को गन्तव्य पर पहुंचाना ही नहीं, उसके मनोबल को बनाये व बढ़ाये रखना भी है। श्री मद्भगवत गीता में सारथी योगिराज कृष्ण ने महारथी अर्जुन का मनोबल व उत्साह जगाने के बाद यही कहा था–

यत्र योगेश्वरः कृष्णों यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीविजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।

अर्थात्– जहाँ योगेश्वर कृष्ण हैं, जहां गान्डीवधारी अर्जुन हैं, वहीं पर श्री विजय, विभूति और अचल नीति का निवास है। दृष्टिही धृतराष्ट्र सारथी संजय की अन्तःकरण रूपी दिव्य दृष्टि से निज द्रग्दृष्टि पथ तय कर लेते हैं। आज भी अधिकांश कार्यपालक अपने वाहन के साथ चालक की व्यवस्था करके चलते हैं। संसार में रथी व सारथी परस्पर मौखिक, दूरभाष या चलभाष से वार्ता करते हैं, किन्तु अध्यात्म जगत में इन्हें इनकी आवश्यकता नहीं होती है। हर रथी को सारथी की अन्तर्ध्वनि को अन्तःकरण के माध्यम से सुनना पड़ता है: जैसे लौकिक यन्त्र सी सुचालित होते हैं, वैसे ही अन्तःकरण शुद्ध व सुपावक होगा, तभी यह अन्तर्ध्वनि आभासित होती हैं किसी विवाह समारोह में दूर–दूर से मित्र–सम्बन्धियों को आमन्त्रित किया जाता है और इसके लिए विस्तृत प्रीतिभोज का आयोजन किया जाता है। सम्बन्धी यह सोचकर आते हैं कि अपने मित्र, सम्बन्धी से मिलाप होगा, खूब मीठी–मीठी बातें होगी, पर वहां बैण्ड बाजों को तो छोड़िये, जनरेटर व डी.जे. के घनघोर शोर में सब एक दूसरे को देखते व आहार–चाट चाटते ही रह जाते हैं। परस्पर वार्तालाप से वंचित रह जाते हैं। आतिथेय, अतिथियों को सम्मान पूर्वक मिठाई भेंट कर विदा कर देते हैं। यान्त्रिक दूरभाष या चलभाष यदि ठीक नहीं हैं तो उनसे टूटी फूटी खरखराहट या अस्पष्ट शब्द सुनने को मिलते हैं, वैसे ही हमारा अन्तर्भाष उपकरण (अन्तःकरण) शुद्ध स्वच्छ व स्वस्थ नहीं है, तो उससे प्रभु प्रेषित ध्वनि शुद्ध स्पष्ट सुनाई देना संभव नहीं है। वह नकारात्मक भी हो सकती है। यदि वह स्वस्थ, कुशल है तो वही अन्तर्ध्वनि मौलिक रूप में सकारात्मक सुनायी देगी। एक वृद्धामाता सर पर भारी गठरी लेकर यात्रा पर निकली। मार्ग में एक घुड़सवार ने मना कर दिया– नहीं–नहीं, हम झंझट में नहीं पड़ते।" कहते हुए आगे निकल गया। कुछ ही दूर आगे चला होगा, कि लौट आया, और विनम्र शब्दों में वह गठरी को वृद्धा से मांगने लगा। वृद्ध ने सतर्क दृष्टि से उस युवक से कह दिया' "बेटा! अब गठरी तुम्हें नहीं दे सकती, क्योंकि जो तुम से कहा गया है, वह मुझसे भी कह गया है। "युवक के दूषित अन्तर्भाष (अन्तःकरण) से आयी दुर्भावना जनित अन्तर्ध्वनि को वृद्धामाता के स्वस्थ सकुशल अन्तर्भाष (अन्तःकरण) ने यथावत रूप से पकड़ लिया था। अस्तु हर मनुष्य को सतर्क रहते हुए अपने ह्रदय अन्तःकरण को 'मन्थरा' होने से बचाकर 'सन्तरा' के अनुरूप आदर्श बनाये रखना चाहिए।

# हम क्यों भटक रहे हैं?

**– श्री शिवकुमार शास्त्री (पूर्व सांसद)**

(श्री शिव कुमार शास्त्री जी भारतीय लोकसभा के दो बार सांसद रहे थे। वे प्रसिद्ध नेता एवं संस्कृत के सुयोग्य विद्वान् थे। उनके द्वारा लिखित यह लेख् १९८२ में गुरूकुल प्रभात आश्रम के दशाब्दी समारोह पर प्रकाश्यमान स्मृति–ग्रन्थ 'दशाब्दी समारोह' में प्रकाशित हुआ था। उपयोगी समझकर इसे पुनः प्रसारित किया जा रहा है।)

अफ्रीका के हबशियों को जब अमेरिका की मण्डी में बेचने के लिए लाया जाता था। तब एक इंगिलिश लेडी 'मिस स्टो' ने एक बूढ़े हबशी की जीवनी को 'अंकल टोम्स केबिन' नाम की पुस्तक के रूप में लिखा। उसे इस पुस्तक के रूप में लिखा। उसे इस पुस्तक के लिखने पर जेल का दण्ड मिला, पर अन्त में उसके विचार विजयी हुए और हबशियों का बेचना बन्द हुआ।

इस पुस्तक में 'स्टो' ने कई बातें बहुत महत्वपूर्ण लिखी हैं। वह लिखती है कि "जो लोग पराधीन होते हैं, उनमें दो बातें बहुत महत्वपूर्ण लिखी हैं। वह लिखती है कि "जो लोग पराधीन होते हैं, उनमें दो बातें बहुत शीघ्र पनपती हैं, पहली तो यह कि उन लोगों को अपने पहले खान–पान, रहन–सहन, चाल–ढाल, बोल–चाल तथा जीवन के सभी साधनों में रूचि बढ़ने लगती है। उनकी दासता जितनी पुरानी होती जाती है ये दोनों बातें उतनी गहरी स्थायी और सुदृढ़ होती जाती हैं। यदि इन दासों के लिए मालिकों की ओर से शिक्षा–दीक्षा का भी प्रबन्ध कर दिया जाये तो वे लोग इस शिक्षा के माध्यम से अपने आपको यहां तक बदल डालते हैं कि चमड़ी के बिना इनका पहचानना भी कठिन हो जाता है। ये अपनी सत्ता को, अपने अतीत जीवन को, अपने पुराने गौरव को यहां तक कि अपने बाप–दादों को भी भूलकर अपने को प्रत्येक बात में अपने स्वामियों के जीवन में बदलने के लिए यत्नशील रहते हैं, किन्तु ऐसा दिन कभी नहीं आयेगा कि अपने मालिको के साथ एकम–एक कर सकें।

जो बातें इस देवी ने अपने गम्भीर चिन्तन के पश्चात् लिखी हैं, उनकी यथार्थता को हम भारत के आज के ढर्रे को देखकर अनुभव कर सकते हैं। हमें भौतिक स्वातन्त्र्य प्राप्त किए ३५ वर्ष हो गए, किन्तु मानसिक दृष्टि से हम अब भी दास हैं, अपितु वास्तविकता के उद्घाटन के लिए यह कहना अधिक सार्थक होगा कि दासता के रोग का उभार हमारी भौतिक स्वतन्त्रता के पश्चात् अधिक हुआ है। हममें अंग्रेजियत जितनी इन ३५ वर्षों में बढ़ी, उतनी पहले के १५० वर्षों में भी नहीं आयी। आज तथाकथित सुसंस्कृत और बड़े घरों में बच्चे जन्म से ही अंग्रेजी बोलते हैं। जितने अंग्रेजी के माध्यम वाले शिक्षणालयों की दुकान आज चमक रही है पहले कहां थीं? इन स्कूलों में अपने बच्चों को केवल प्रवेश दिलाने के लिए ही अभिभावकों को महीनों दौड़–धूप करनी पड़ती है। आज अपनी इस स्थिति पर कोई कवचार करने को उद्यत नहीं है कि हम कहां जा रहे हैं? हमारा क्या बनेगा? और हमारी इस स्थिति को देखकर संसार के दूसरे देश हमारे विषय में क्या धारणा बनाते हैं?

एक अमेरिकी पत्रकार श्री हैनरी सेंडर भारत में भ्रमण के लिए आये। भातर में भ्रमण करते हुए भारतीयों की स्थिति को देखकर जो प्रतिक्रिया उन पर हुई, वह अमेरिका में जाकर वहां के प्रसिद्ध पत्र 'प्रौग्रेसिव' में उन्होंने लिखी। उनके लेख का अपेक्षित भाग इस प्रकार है–

'अंग्रेजों के चले जाने के बाद भारत में ३० वर्षों में झण्डे के सिवाय और कोई परिवर्तन नहीं आया है। ..... भारतीय आपस में एक दूसरे के साथ जिस तरह व्यवहार करते हैं, उनपमें भी उनके औपनिवेशक मस्तिष्क की झलक मिलती है। .... जब वे किसी भारतीय से ही बात करते है तो धीरे–धीरे उनका वार्तालाप अंग्रेजी में बदल जाता है। शायद भारतीय यह भूलना ही नहीं चाहते कि उन्हें उनके अंग्रेज शासकों ने लिखाया–पढ़ाया है। एक भारतीय व्यवहार और आचरण में अपने को योरोपीय से घटकर ही मानता है। जब वह किसी योरोपीय के साथ बात करे या रहे तो वह अपने को योरोपीय नौक्र–सा मानता है। .... जब मैं भारत पहुंचा तो मैंने बराबर हिन्दी में बातचीत करने की कोशिश की। लेकिन मुझे लगा कि यह व्यर्थ ही है, क्योंकि भारतीय हिन्दी में बात करना अपना अपमान समझते हैं।'

यह है हमारे चिन्तन और व्यवहार की प्रतिक्रिया। हम भारतीयों के लिए इससे अधिक लज्जा की और कोई बात नहीं हो सकती। आश्चर्य तो यह है कि हमारे इन व्यवहारों के कारण विदेशों से हमारे राजनयिकों का अनेक बार अपमान भी हुआ, परन्तु हम हैं कि जो उस स्थिति को बदलने को उद्यत नहीं हैं। यह बड़ी प्रसिद्ध घटना हमारी स्वतन्त्रता के प्रारम्भिक काल की है कि जब रूस में नियुक्त हमारे राजदूत ने अपने परिचय के कागजात अंग्रेजी में तैयार किये हुए प्रस्तुत किये तो रूस के अधिकारियों ने उन्हें स्वीकार नहीं किया। उन्होंने कहा कि पत्र भारत अथवा रूस की भाषा में ही लिखे जा सकते हैं।

वस्तुतः बात यह है कि इस दास मनोवृत्ति के रोग का ठीक–ठीक निदान ही नहीं हुआ। जब तक रोग के कारण तक न पहुंचा जाए तब तक ऊपर की लीपा–पोती से कुछ बनने वाला नहीं है। ये रोग के कीटाणु हमारे बच्चों के मन और मस्तिष्क में प्रवेश करते हैं उन्हें दी जाने वाली शिक्षा के माध्यम से। तथाकथित सुसंस्कृत घरानों के छोटे–छोटे बालक तब फर्राटे से अंग्रेजी बोलते हैं तो उनके माता–पिता प्रसन्नता से गद्गद् हो जाते हैं और फिर आप आशा करते हैं कि उनमें स्वभाषा और संस्कृति के लिए राष्ट्रीय स्वाभिमान जागृत हो। वे तो यह धारणा बनाते हैं कि जो अंग्रेजी न पढ़ सकते और न ही बोल सकते वे पिछड़े हुए और असभ्य हैं।

अतः इसमें सुधार के लिए आवश्यकता है कि शिक्षा के ढांचे में आमूल–चूल परिवर्तन किया जाय। ये पब्लिक और कानवेन्ट स्कूल कठोरता से एक साथ समाप्त कर दिये जावें। अंग्रेजी के स्कूल और कॉजिल मैकाले ने भारतीयों को शिक्षित करने के लिए नही अपितु अंग्रेजों की भाषा समझकर भारतीयों पर शासन करने में सुविधा प्राप्त करने के लिए खोले थे। मैकाले के निम्न शब्द बहुत प्रसिद्ध हैं, इसलिए यहां उनका उद्धरण प्रासंगिकता को देखकर देना उचित होगा–

**We must do our bet to from a class who may be interpreter between us and the millions whom we govern. A class of person Indian in blood and colour, but English in tast in opinions in morals and in intellect.**

आश्चर्य है कि भारत के स्वाधीन होने पर प्रत्येक राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री ने वर्तमान शिक्षा के ढांचे को भारत के लिए अनुपयुक्त बताया, इसे बदलने की बात भी कही, किन्तु हम देखते हैं कि परिवर्तन कुछ नहीं हुआ अपितु दास मनोवृत्ति की जकड़ पहले से और कड़ी होती जा रही है।

'फलक के नीचे से हम तो कभी के निकल जाते, मगर रास्ता न पाया।'

इस दिशा में लिखने के लिए बहुत कुछ है, किन्तु लेख को सीमा में रखना भी आवश्यक है। शिक्षा का उद्देश्य शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना है। शारीरिक उन्नति के साधन ब्रह्मचर्य, व्यायाम और प्राणयाम, आत्मिक उन्नति के लिए यम, नियमादि को अपनाना आवश्यक है। सांसारिक उन्नति के लिए शिल्प, व्यावसाय, वाणिज्यादि साधन हैं, किन्तु प्रचलित प्रणाली से किसी एक उद्देश्य की पूर्ति भी तो नहीं होती। मोटे तौर पर इस पद्धति में अग्रलिखित त्रुटियां हैं–

१. सदाचार की कमी– मानवता के शत्रु काम, क्रोधादि को जीतने की शिक्षा का सर्वथा अभाव है। गाली–गलौच करना, अभक्ष्य भक्षण करना, सिगरेट, मद्य पीना आदि कुकर्म तो यहां उत्तराधिकार में प्राप्त होते हैं।

२. संस्कृति का अभाव पाठ्यक्रम में निर्धारित ग्रन्थों में बी.ए. और एम.ए. तक जो विचार सामग्री विद्यार्थियों ने प्राप्त की है, उससे प्रभावित होना स्वाभाविक है, किन्तु ग्रन्थों में चाहे और जो कुछ हो पर आर्य–संस्कृति क्या है? यह उसमें नहीं है।

३. ब्रह्मचर्य का अभाव– ब्रह्मचर्य बिना गुरूओं के नियन्त्रण तथा सादे और तपोमय जीवन के बिना सम्भव नहीं है। उसका यहां सर्वथा अभाव है।

४. दूषित नागरिक रहन–सहन में निवास– चारों ओर सिनेमाओं की भरमार, सिनेमा कलाकारों के नाम और आकृतियों से बच्चा–बच्चा परिचित है, उस पर भी कोढ़ में खाज, घरों में टेलीविजन। तरंग में गुनगुनाने पर युवकों के मुख से कोई सिनेमा का गीत ही निकलेगा। किसी अच्छे कवि का भक्ति और देशोत्थान का गीत अपवाद की वस्तु है।

५. सहशिक्षा– प्राचीन मर्यादा थी कि बालक–बालिकाओं के विद्यालय पृथक्–प्रथक् और दूर–दूर हों। लड़कियों की शिक्षा के लिए देवियां और बालकों को पढ़ाने के लिए पुरूष अध्यापक रहें। यह बहुत मनोवैज्ञानिक ओर दूरदर्शितापूर्ण पद्धति थी। प्रारम्भ में आर्यसमाज ने अपने शिक्षणालयों में यह दृढ़ता बरती भी, किन्तु समय का प्रभाव सबको बहा ले गया। उर्दू के शायर अकबर ने शब्दों में–

'मयखानये रिफार्म की चिकनी जमीन पै।
वाहज का खानदान आखिर फिसल गया।'

६. सांस्कृतिक कार्यक्रम– सांस्कृतिक कार्यक्रम के नाम पर आसांस्कृतिक नृत्य, अभिनय आज के मन्त्रियों के सम्मान में हमारे बालक बालिकाएं नाचने और गाने के कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं और मंत्रीजी प्रसन्न मुद्रा में उनकी सराहना करते हैं। यहां तो कुंए में भाग पड़ने वाली कहावत

शेष पृष्ठ ६ पर

पृष्ठ ३ का शेष

## सिक्के के दो...

इतिहास में अनेक मूल्यवान घटनाएं हमें सदा प्रेरणा देती रहेगी।

(साभार श्री नारायण स्वामी जी महाराज का जीवन चरित्र। लेखक पंडित गंगा प्रसाद उपाध्याय, विश्वप्रकाश जी)

मनुष्यता से बड़ा कोई धर्म नहीं है–

अपनी खेती की देखभाल करके घर लौट रहे हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार और कर्णधार आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी को रास्ते में सहसा किसी के चिल्लाने की ध्वनि सुनाई दी। शीघ्र जाकर देखा कि एक स्त्री को साँप ने काट लिया है। त्वरित्बुद्धि आचार्य को लगा कि यहाँ ऐसा कोई साधन नहीं है जिससे सर्प–विष को फैलने से रोका जाये। इसलिये उन्होंने फौरन यज्ञोपवीत (जनेऊ) तोड कर सर्प–दंश के ऊपरी हिस्से में मजबूती से बांध दिया। फिर सर्प–दंश को चाकू से चीरकर विषाक्त रक्त को बलात् बाहर निकाल दिया। उस स्त्री की प्राण–रक्षा हो गयी। इस बीच गांव के बहुत से लोग इकट्ठे हो गये। वो स्त्री अछूत थी। इसलिये गांव के पण्डितों ने नाराजगी प्रकट करते हुए *कहा* ''जनेऊ जैसी पवित्र वस्तु का इस्तेमाल इस औरत के लिये करके आपने धर्म की लुटिया डुबो दी। हाय! गज़ब कर दिया। '' ''विवेकी आचार्य ने कहा 'अब तक नहीं मालूम तो अब से जान लीजिये, मनुष्य और मनुष्यता से बड़ा कोई धर्म नहीं होता। मैंने अपनी ओर से सबसे बड़े धर्म का पालन किया है।

रिश्तों से बड़ा दलितोद्धार

प्रोफेसर शेर सिंह पूर्व केन्द्रीय मंत्री भारत सरकार के पिता अपने क्षेत्र के प्रसिद्ध जागीरदार थे। दलितों से छुआछूत का भेदभाव मिटाने के लिए उन्होंने अपने खेतों में बने कुएं दलितों के लिए पानी भरने हेतु स्वीकृत कर दिए। प्रोफेसर शेर सिंह उस समय विद्यालय में पड़ते थे मगर उस काल की प्रथा अनुसार उनका विह सुनिश्चित हो चुका था। जब समधी पर ने शेर सिंह जी के पिता के निर्णय को सुना तो उन्होंने सन्देश भेजा कि या तो दलितों के लिए कुंए से पानी भरने पर पाबन्दी लगा दे अन्यथा इस रिश्तें का समाप्त समझे। शेरसिंह जी के पिता ने रिश्तों को दलितोद्धार के सामने तुच्छ समझा और रिश्ता तोड़ना मंजूर किया। मगर दलितों के साथ न्याय किया। जब आर्यसामज केक मूर्धन्य विद्वान पंडित बुद्धदेव जी वेदालंकार को यह जानकारी मिली तो वे शेर सिंह जी के पिता से मिलने गए एवं उन्हें आश्वासन दिया कि उनकी निगाह में एक आर्य कन्या है जिनसे शेर सिंह जी का विवाह होगा। कालांतर में उन्होंने अपनी कन्या का विवाह जाति बंधन तोड़कर शेर सिंह जी के साथ किया। शेर सिंह जी जाट बिरादरी से थे जबकि बुद्धदेव जी ब्राह्मण सामज से संबंधित थे।

इस प्रकार के अनेक प्रसंग महाशय रामचन्द्र जी जम्मू, वीर मेघराज जी इन्दौर, लाला लाजपत राय जी गढ़वाल, लाला गंगाराम जी स्यालकोट, पंडित देवप्रकाश जी मध्य प्रदेश, मास्टर आत्माराम अमृतसरी जी वीर सावरकर जी रत्नागिरी, स्वामी श्रद्धानन्द जी दिल्ली, पंडित रामचन्द्र देहलवी दिल्ली आदि के जीवन में मिलते हैं जिनके प्रचार–प्रसार से जातिवाद उनमूलन की प्रेरणा मिलती हैं। यही इस सिक्के के दो पहलू है कि दलितोद्धार के लिए दलितों पर अत्याचार के स्थान पर भेदभाव मिटाने वाली घटनाओं को प्रचारित किया जाना चाहिए।

## आवश्यक सूचना

सभी आर्य बन्धुओं को सूचित किया जाता है कि गतवर्ष की भांति नवशील धाम कल्याणपुर, कानपुर नगर, का वार्षिकोत्सव इस वर्ष भी दिनांक १६ नवम्बर से १८ नवम्बर तक बड़ी धूम धाम से मनाया जायेगा।

इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान स्वामी धर्मबन्धु जी महाराज राजकोट, गुजरात तथा प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री भानु प्रकाश आर्य जी पधार रहें हैं। आप धर्म प्रेमी आर्यों से निवेदन है कि इस अवसर पर अपना अमूल्य समय प्रदान कर कार्यक्रम में भाग लें तथा पूर्ण के भागीदार बनें तथा अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करें।

–पं0 सुखवीर शास्त्री धर्माचार्य,
नौसिल धाम कल्याणपुर, स्टेशन के पास, कानपुर नगर

## सूचना

**प्रदेश की समस्त आर्य समाजों को सहर्ष अवगत कराया जा रहा है अपने–अपने आर्य समाजों में वेद प्रचार सप्ताह के कार्यक्रम उत्साह और भव्यता के साथ सम्पन्न करायें।**

**सम्पन्न हुए कार्यक्रमों की सूचना फोटो सहित पूर्ण विवरण के साथ सभा कार्यालय को भेजें जिससे आर्यमित्र में प्रकाशित किया जा सके।**

**स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती**
सभा मंत्री
सम्पर्क : 9837402192

**हरीश कुमार शास्त्री**
व्यवस्थापक
सम्पर्क : 9320622205

–साभार

ससुर ने वढ़ाया हौसला तो कायम कर दी मिसाल

## सीता ने नशे की कैद से आजाद कराया गांव

ललित चौधरी • हसनपुर (अमरोहा)

परदे की ओट में रहने वाली बहू को जब गांव की युवा पीढ़ी शराब में बर्बाद होती दिखी तो उसने एक ऐसा संकल्प लिया, जो मिसाल बन गया। बहू ने पूरे गांव को नशामुक्त करने की ठान ली। शुरुआत में लोगों ने उस पर तंज कसे मगर बहू को ससुर का साथ मिला और उसके हौसलों को पंख लग गए। उसने जो ठाना था वह कर दिखाया। गांव के नशामुक्त होने के बाद आज पूरा गांव उसे सम्मान की नजर से देखता है।

यहां बात हो रही है अमरोहा जनपद की हसनपुर तहसील के गांव करनपुरी की। वर्ष 1993 में यहां रहने वाले यशपाल सिंह की शादी सीता आर्या से हुई थी। परम्परा के मुताबिक सीता भी बड़ों के आगे घूंघट में ही रहती थी। उन दिनों गांव में कच्ची शराब का काफी चलन था। खुशी हो या गम अधिकांश लोग टल्ली होकर घूमते नजर आते थे। इनमें युवा पीढ़ी के लोगों की संख्या भी काफी अधिक थी। यह देखकर सीता दुखी थी। उसके ससुर होराम सिंह पहले से ही नशाखोरी के खिलाफ थे। वह भारतीय किसान यूनियन के राष्ट्रीय कार्यकारणी सदस्य एवं महेंद्र सिंह टिकैत के करीबी भी थे। सीता ने अपने ससुर व पति से गांव में नशामुक्ति अभियान चलाने की मंशा जताई। इस पर उसे रजामंदी मिल गई। इसके बाद सीता ने पर्दे से बाहर निकलकर सबसे पहले शराबियों से परेशान महिलाओं को एकजुट किया। उसके बाद नशाखोरी के खिलाफ बिगुल फूंक दिया। गांव में शराब पिये जो भी दिखता सीता उसे इतना समझाती कि वह भविष्य में शराब से तौबा करने लगा। सीता के प्रयास को कामयाबी मिलती देख गांव की अन्य महिलाओं का भी समर्थन मिलने लगा। इसके चलते धीरे-धीरे शराब पीने वालों की संख्या कम होती चली गई। मगर सीता ने अपना अभियान जारी रखा। इसका असर यह हुआ कि आज करनपुरी गांव नशा मुक्त हो चुका है। पांच साल पहले पड़ोस के गांव करनपुर माफी में जब देसी शराब का ठेका खुला तो उसके खिलाफ भी सीता महिलाओं के साथ मैदान में उतर आई थीं। जिसके चलते उन्हें अपने मकसद में कामयाबी हासिल हो गई।



सीता आर्या • जागरण

### ससुर ने दी पर्दे से बाहर आने की छूट

पर्दे से बाहर आने की छूट सीता आर्या को पतित पावनी गंगा मैया की गोद में तिगरी मेले के दौरान उसके ससुर होराम सिंह ने दी। शादी के कुछ समय बाद तिगरी गंगा मेले में परिवार के साथ सीता को भी जाने का मौका मिला। मेले में बिजनौर से प्रसिद्ध उपदेशक राकेश आर्य आए थे। भजन कीर्तन चल रहा था। बहुत सारी महिलाएं सुन रही थी। इतने में ही राकेश आर्य ने कहा कोई महिला ऐसी है जो भजन सुना सकती है। सीता भजन गाने की स्कूल के समय से ही शौकीन थी, लेकिन ससुर से परदा के चलते वह खामोश रही। इतने में ही कुछ महिलाएं बोली सीता बहुत अच्छी गायक है। भजनोपदेशक के कहने पर सीता के ससुर ने उसे भजन प्रस्तुत करने की अनुमति दे दी।

### अंधविश्वास मिटाने को भी वहाया पसीना

आर्य परिवार से ताल्लुक रखने वाली सीता का जन्म वर्ष 1972 में हसनपुर तहसील के ही मकनपुर शुमाली गांव में हुआ था। उन्होंने हाईस्कूल तक पढ़ाई की है। सीता महिलाओं को अंधविश्वास से दूर रहने के प्रति भी जागरूक करती है। भाकियू की महिला जिलाध्यक्ष तथा गांव की आशा होने के नाते सीता से हसनपुर तहसील क्षेत्र की महिलाएं खासी प्रभावित हैं। उसके साथ महिलाओं की एक खास टीम है। सीता कहती हैं कि गांव निवासी नीलम देवी, भागवती, मुनेश देवी, हरवती, कमलेश, मिथलेश, बिमला, उर्मिला आदि महिलाओं ने उसे गांव में नशा खोरी बंद कराने में पूर्ण सहयोग किया।

पृष्ठ ५ का शेष

## हम क्यों ...

चरितार्थ हो रही है।

*७. गृहस्थी चक्र का प्रभाव शिक्षा काल में घर में ही रहने से कुटुम्बियों की चिन्ता, रोग, शोक, लड़ाई और झगड़ों के प्रभाव से बच्चे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते।*

८. फीस के बोझ का दबाव– स्कूल और कालेजों की भारी–भरकम फीस का जुटाना भी एक समस्या है। निर्धन ट्यूशन पढ़ा–पढ़ा कर उसे जुटाने का यत्न करते हैं।

६. सादे रहन–सहन का अभाव– विद्यार्थी काल में भी व्यवसाध्य भूषाओं का प्रचलन। चौराहों पर रखकर उनमें लोगों को पकड़ कर बन्द रखा गया जिनमें कई सम्भ्रान्त व्यक्ति भी थे।

७. सजा देने के ऐसे–ऐसे नए तरीके अपनाए गए जिसकी कल्पना भी किसी देश का सभ्य समाज नहीं कर सकता जैसे लोगों को जमीन पर पेट के बल रेंग कर चलाया गया।

८. पंजाब की भीषण गर्मी में भी गिरफ्तार लोगों को खुली ट्रकों में भरकर १५–१५ घंटे खड़ा रखा गया।

६. फरार व्यक्तियों को हाजिर करने के लिए उनके प्रियजनों को बंधक बना कर उनकी जायदाद जब्त अथवा नष्ट कर दी गई।

१०. सजा के बतौर हजारों हिन्दुस्तानियों की घरों की बिजली और पानी के कनेक्शन काट दिए। यूरोपियनों के रहने के लिए हिन्दुस्तानियों के घर जबरन खाली कराए गए। यूरोपियनों के प्रयोग हेतु जिस किसी भी हिन्दुस्तानी के पास कार आदि वाहन थे उन्हें जबरन छीन लिया गया।

११. कई जगह फौजी अदालतों में ८५२ व्यक्तियों पर मुकदमें चलाए गए जिनमें ५८२ की सजाए सुनाई गई एवं बीसों को फांसी की सजा दी गई।

ब्रिटिश सत्ता इसी भ्रम में रही कि यह काण्ड भारतीय जनमानस को सदा आतंकित करता रहेगा। परन्तु वे यह सोचक भी न सके कि यही घटना आगे चलकर ब्रिटिश साम्राज्य की ताबूत में कील ठोंकने का काम करेगी। आगे चलकर महान क्रान्तिकारी ऊधम सिंह ने १३ मार्च १६४० को इस काण्ड के एक जिम्मेदार सर माइकल ओ डायर को लन्दन में गोली मारकर धराशायी कर दिया था।

इतिहास गवाह है कि 'जलियावाला बाग काण्ड' के बाद स्वतंत्रता संग्राम में इतनी तेजी आई कि चन्द वर्षो के अन्दर ही अंग्रेज भारत स्वतंत्र करने को विवश हुए।

– सौजन्य से
उदय खत्री

# चन्द्र शेखर आज़ाद

– साभार

आज़ाद का जन्म अलीराजपुर राज्य के झावरा नामक स्थान पर एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। आर्थिक स्थिति बहुत साधारण थी। वे बचपन से ही बडत्रे साहसी तथा निर्भीक थे। निशानेबाजी में भी बड़े दक्ष थे। खेल–कूद में सदा आगे ही रहते।

प्ररंभिक शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात् संस्कृत पढ़ने के लिए काशी चले गए। वहां पर एक संस्था की सहायता से धर्मशाला में रहकर संस्कृत पढ़ने लगे। उन्हीं दिनों गांधी जी के असहयोग आन्दोलन में सम्मिलित हो गए। १२–१३ वर्ष की आयु में ही विदेशी वस्त्रों और शराब की दुकानों पर धरना देते हुए गिरफ्तार हो गए। मजिस्ट्रेट ने पूछा– "तुम्हारा नाम क्या है?" आज़ाद ने उत्तर दिया–"मेरा नाम आज़ाद है।" मजिस्ट्रेट ने फिर पूछा –"पिता का नाम क्या है?" आज़ाद ने कहा पिता का नाम स्वतंत्र है।" मजिस्ट्रेट ने फिर पूछा– "रहते कहाँ हो?" आजाद ने उत्तर दिया– "जेलखाने में।"

उत्तर सुनकर मजिस्ट्रेट को क्रोध आ गया। उसने आज़ाद को १५ बेंतो की सज़ा सुनाई। आज़ाद जेल में ले जाए गए जहाँ उन्हें सज़ा दी सुनाई। उन्होंने हर बेंत पर वन्देमातरम् का नारा लगाया बड़ी वीरता से उन्होंने बेतों की मार को सहन किया। सारा शरीर छिल गया था, जगह–जगह से रक्त निकलने लगा था।

कारागार से निकलते ही आज़ाद को जनता से अपने कन्धों पर उठा लिया, नगर में विशाल जुलूस निकालया गया। बड़े–बडे नेताओं ने भी आज़ाद के साहस की जी खोलकर प्रशंसा की।

असहयोग आन्दोलन के बन्द हो जाने से चारों ओर निराशा छा गई थी। साहसी युवक क्रांतिकारियों के दल में सम्मिलित होने लगे। आज़ाद भी क्रांतिकारियों के दल में सम्मिलित हो गए। काशी में क्रांतिकारियों का एक केन्द्र था। अपने साहस तथा निर्भीकता से आज़ाद अपने क्रांतिकारी दल में अत्यंत लोकप्रिय और महत्वपूर्ण व्यक्ति बन गए। काशी में क्रांतिकारी पर्चे को इस चतुराई से बांटा गया कि एक चर्चा पुलिस के दफ्तर में भी पहुंच गया।

अस्त्र–शस्त्रों को प्राप्त करने के लिए धन की आवश्यकता को पूरा करने हेतु बड़े–बड़े डाके डालने की योजना बनाई गई। उसी के परिणामस्वरूप १६२५ में काकोरी में ट्रेन लूटी गई। इस डकैती में आज़ाद ने भी भाग लिया था किंतु वे पकड़े नहीं गए। उनकी गिरफ्तारी के लिए पुस्कार की घोषणा भी की गई। उन्होंने प्रतिज्ञा की थी कि वे कभी भी पुलिस के हाथ जीवित नहीं आएंगे। इस प्रतिज्ञा का पालन बड़ी वीरता से किया।

१६२५ से १६२८ तक वे फरार रहे। कई तरह के कार्य तथा वेश धारण कर वे इधर–उधर घूमते रहे। १६२८ में भगतसिंह आदि से पुनः सम्पर्क बनाया। ला० लाजपत राय पर लाठियां बरसाने वाले साण्डर्स की हत्या करके खून का बदला खून से लिया। उन्हें तथा भगतसिंह को पकड़ने के लिए सरकार ने पूरा ज़ोर लगाया किन्तु उन्हें बन्दी नहीं बनाया जा सका।

जब १६२९ में सरकार ने मज़दूरों के दमन के लिए एक काला कानून पास करने का निश्चय किया तो भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने केन्द्रीय असेम्बली में बम विस्फोट करके उस कानून के प्रति विरोध प्रकट किया। उस योजना के सूत्रधार भी आज़ाद ही थे। जब भगतसिंह आदि पर लाहौर में मुकदमा चल रहा था तो उन्होंने भगवतीचरण आदि के सहयोग से भगतसिंह आदि को छुड़ाने का प्रयत्न किया, परन्तु सफल न हो सके।

पुलिस छाया की तरह उनके पीछे पड़ी रहती थी। प्राणों को हथेली पर लेकर, पुलिस की आँखों में धूल झोंककर वे स्थान–स्थान का चक्कर काटते रहे। दल का कुछ रूपया इलाहाबाद के एक व्यापारी के पास रखा हुआ था। आज़ाद उस रूपये को लेने इलाहाबाद गए और व्यापारी को अपने आगमन की सूचना भेजी। व्यापारी ने उनके पास सूचना भेजी कि कम्पनी बाग में अमुक स्थान पर अमुक समय पर उनके पास रूपया पहुंच जाएगा।

कहते हैं कि उस व्यापारी ने आज़ाद को धोखा दिया और लोभ में पड़कर रूपया हड़पने के विचार से पुलिस को सूचना दे दी। २७ फरवरी १६३१ के दिन ग्यारह बजे के लगभग आज़ाद एक साथी के साथ एल्फ्रेड पार्क (कम्पनी बाग) में एक वृक्ष के नीचे बैठे हुए थे। अचानक पुलिस कप्तान ने पुलिस के साथ पहुंचकर उन्हें चारों ओर से घेर लिया और उन्हें आत्मसमर्पण करने को कहा। आज़ाद ने अपने साथी को भगाकर कप्तान की चेतावनी का उत्तर गोली से दिया। दोंनों ओर से गोलियां चलने लगी। एक ओर पुलिस के अस्सी जवान और दूसरी ओर अकेल आज़ाद।

आज़ाद के पिस्तौल में जब केवल एक गोली शेष थी तो उन्होंने स्वाभिमानी सेनापति की भांति ३२ मिनट तक सशस्त्र पुलिस से मोरचा लेते हुए माउज़र पिस्तौल की नली अपनी बायीं कनपटी से भिड़ा दी और ट्रिगर दबा दिया। क्रान्ति का दीपक सदा के लिए बुझ गया।

एल्फ्रेड पार्क (कम्पनी बाग) के जिस वृक्ष के नीचे आज़ाद की समाधि है। उनका शव जनता को नहीं सौंपा गया। उनके शरीर के रक्त की बूंदे उस बाग की मिट्टी में मिलकर भारतमाता को मानो अभिषेक कर गईं। उनका यह बलिदान सदैव भारतवासियों को प्रेरित करता रहेगा। वर्तमान की उलझी हुई समस्याओं के समाधान के लिए उनकी देशभक्ति, लगन, त्याग और तपस्या की तड़प आज भी हमारा मार्ग आलोकित करते हैं।

# आवश्यक सूचना

आर्य समाज बुढ़ाना मुज्जफर नगर में अर्थवेद पारायण यज्ञ एवं रामायण दिनांक १२, १३, १४ एवं १५ नवम्बर, २०१८ में सम्पन्न होगा। कार्यक्रम एवं स्थान निम्नवत हैं :–

१. दिनांक १२ नवम्बर, २०१८ को आर्य समाज एवं आर्य कन्या इ.का. बुढ़ाना मुज्जफ्फर नगर में।
२. दिनांक १३ नवम्बर, २०१८ को डी.ए.वी. इण्टर कालेज बुढ़ाना मुजफ्फर नगर में।
३. दिनांक १४ नवम्बर, २०१८ को डी.ए.वी. डिग्री कालेज में।
४. दिनांक १५ नवम्बर, २०१८ को डी.ए.वी. कालेज में।

–अरविन्द कुमार
कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०

## समस्त आर्य समाजों/जिला आर्य प्रतिनिधि सभाओं को आवश्यक सूचना एवं निर्देश

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०, नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से सम्बद्ध उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड में कार्यरत् आर्य समाजों एवं जिला आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रधान/ मंत्री/ कोषाध्यक्ष को सूचित किया जाता है, संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ द्वारा प्रदेश में कार्यरत् सभी आर्य समाजों एवं जिला सभाओं को बावत वर्ष २०१६ एवं वित्तीय वर्ष २०१७–१८ हेतु वार्षिक चित्र प्रेषित किये जा रहे हैं। सभी आर्य समाजों के पदाधिकारियों को निर्देशित किया जाता है, कि वे अपनी–अपनी आर्य समाजों का वार्षिक विवरण भरकर संस्था कार्यालय में दिनांक–३० नवम्बर, २०१८ तक वार्षिक चित्र (वार्षिक विवरण) एवं दशांश जमा करके रसीद प्राप्त कर लें तथा निम्न अभिलेख सभा कार्यालय में उपलब्ध करा दें–

०१. सभासदों की सूची तथा सभासद बनाये जाने की तिथि अंकित किया जाना आवश्यक है।
०२. साधारण सदस्यों की सूची तथा सभासद बनाये जाने की तिथि अंकित किया जाना आवश्यक है।
०३. वार्षिक चुनाव कार्यवाही पंजिका की छायाप्रति।
०५. चल–अचल सम्पत्तियों का विवरण।
०६. आर्य समाज के प्रधान, मन्त्री एवं कोषाध्यक्ष के नाम एवं मोबाइल नम्बर एवं आर्य समाज का स्पष्ट पता।
०७. आर्य समाज में कितने कक्ष, यज्ञशाला एवं किरायेदार हैं और कितना किराया देते हैं, का विवरण।

**स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती,**
सभा मन्त्री

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूरभाष : ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४१, मंत्री- ०६८३७४०२१६२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com ई-मेल आर्य मित्र aryamitrasaptahik@gmail.com

सेवा में
........ ........ ........
........ ........ ........

# आर्य समाज हरदोई का 3 दिवसीय वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज हरदोई का १३३वां वार्षिकोत्सव दिनांक १७, १८ एवं १६ अक्टूबर, २०१८ में समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के प्रधान डॉ० धीरज सिंह, उपप्रधान– राजीवरंजन मिश्र, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा हरदोई के प्रधान, श्री वंशीधर शुक्ल, एवं उपदेशक श्री विमल आर्य एवं आर्य समाज के प्रधान एवं मंत्री सुश्री सीमा मिश्र, निधिआर्या, ओंकारनाथ शास्त्री, किरन आर्या, संदीप वैदिक, आदि लोगों ने अपने प्रवचन, भजन एवं गरिमामयी विचार व्यक्त किए तथा आर्य समाज को शीर्ष उँचाइयों तक ले जाने की सभी आर्य समाजों को निर्देश दिये। फोटो चित्र प्रकाशित किये जा रहे हैं।










## आवश्यक सूचना

समस्त आर्य जनों को सूतिच किया जाता है आर्य समाज पूरे कुटी चौंसा, कुण्डा प्रतापगढ़ एवं आर्य समाज दिलेरगंज, कुण्डा प्रतापगढ़ के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक ०८, ०६ एवं १० नवम्बर २०१८ को डॉ० हरबंस मौर्य क्लीनिक के पास दिलेरगंज रोड, पूरे धनऊ प्रतापगढ़ में वार्षिकोत्सव धूम–धाम से समारोहपूर्वक सम्पन्न होगा।

जिसमें आर्य जन भारी से भारी में भागीदारी सुनिश्चित कर कार्यक्रम को सफल बनायें।

दिल्ली चलो
ओ३म्
वैदिक विचारधारा को विश्वभर में गुंजायमान करने के संकल्प को साथ लेकर
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
दिल्ली चलो




सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में
भारत की राजधानी दिल्ली में विश्वभर के आर्यों का महाकुंभ

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
25, 26, 27, 28 अक्टूबर, 2018
तदनुसार कार्तिक कृ० १, २, ३, ४ विक्रमी सम्वत् २०७५
विश्व शान्ति यज्ञ, योग तथा सामाजिक व राष्ट्रीय विषयों पर
तपोनिष्ठ संन्यासियों एवं वैदिक विद्वानों के प्रेरणास्पद उद्बोधन एवं प्रवचन
लाखों की संख्या में भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनायें।

–: सम्मेलन स्थल :–
स्वर्ण जयंती पार्क, रोहिणी, सैक्टर-10, दिल्ली

निवेदक-


डॉ० धीरज सिंह आर्य
प्रधान- आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०

अरविन्द कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष- आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री- आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र० 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक – मुद्रक –प्रकाशक –श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है– सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।